सोनिया युग
की कांग्रेस

एच. एल.दुसाध

सह-लेखक

डॉ. कौलेश्वर प्रियदर्शी — डॉ. कविश कुमार

सोनिया युग की कांग्रेस

सोनिया युग की कांग्रेस

लेखक

एच.एल. दुसाध

सह-लेखक

डॉ. कौलेश्वर प्रियदर्शी - डॉ. कविश कुमार

डाइवर्सिटी फॉर इक्वालिटी ट्रस्ट

लखनऊ

द्वितीय संस्करण : 2025

प्रकाशक : **डाइवर्सिटी फॉर इक्वालिटी ट्रस्ट**
डाइवर्सिटी हाउस, 2/1467,
आदिल नगर, कल्याणपुर, लखनऊ-226022
E-mail : hl.dusadh@gmail.com
मो. : 9654816191

© **डाइवर्सिटी ट्रस्ट**

मूल्य : 600.00 रुपये

रचना	:	**सोनिया युग की कांग्रेस**
लेखक	:	एच.एल. दुसाध
आवरण	:	कम्प्यूटेक सिस्टम
शब्दांकन	:	कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक	:	क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली-32

समर्पित

वरिष्ठ कांग्रेस नेता और सफल पूर्व केन्द्रीय मंत्री
श्रीमती मोहसिना किदवई को, जिन्होंने
नेहरू, इंदिरा और कांग्रेस विचारधारा के प्रति
आजीवन प्रतिबद्धता का एक विरल
दृष्टान्त स्थापित किया है

शुभकामना संदेश

पूरे भारत में डाइवर्सिटी मैन ऑफ इंडिया के रूप में विख्यात एच.एल. दुसाध सामाजिक परिवर्तन पर सर्वाधिक लेखन करने वाले दुनिया के चुनिंदा लेखकों में एक हैं। महज ढाई दशकों में सामाजिक न्याय और वंचितों की भागीदारी पर सौ के करीब किताबें देने वाले दुसाध जी ने कांग्रेस की राजनीति पर जितना लेखन किया है, वैसा शायद कोई और नहीं कर सका। राहुल गांधी : कल, आज और कल, रियल मदर इंडिया : सोनिया गांधी, राहुल गांधी : सामाजिक न्याय के नए मसीहा, सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन : राहुल गांधी और सोनिया युग की कांग्रेस उनकी चर्चित किताबों में शुमार है। भारी खुशी की बात है कि 2024 के लोकसभा चुनाव के कुछ माह पूर्व प्रकाशित सोनिया युग की कांग्रेस का दूसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। इस किताब ने लोगों का ध्यान अलग से आकर्षित किया था।

यह किताब बताती है कि अंग्रेजों ने लूट-खसोट कर जिस भारत की बाग़डोर कांग्रेस को सौंपी थी, 1947 तक उस देश में सुई तक नहीं बनती थीं : सारा देश राजा-रजवाड़ों के झगड़ों में बटा हुआ था। देश के मात्र पचास गाँवों में बिजली थी। किसी गाँव में नल नही थे। पूरे देश में मात्र दस बाँध थे! सीमाओं पर मात्र कुछ सैनिक : चार विमान और बीस टैंक थे! देश की सीमाएँ चारों तरफ़ से खुली थी और खजाना ख़ाली था। ऐसे बदहाल दशा में भारत कांग्रेस को मिला था! ऐसे बदहाल देश में कांग्रेस ने देखते ही देखते कुछ ही दशकों में विश्व की सबसे बड़ी ताक़त वाली सैन्य शक्ति तैयार कर दी; हज़ारों विमान-हज़ारों टैंक, अनगिनत फैक्टरियां खड़ी करने के साथ लाखों गाँवों में बिजली; सैकड़ों बाँध, लाखों किलोमीटर सड़कों का निर्माण; परमाणु बम;हर हाथ में फ़ोन; हर घर में मोटर सायकल वाला मजबूत देश बना कर दिखा दिया।

वास्तव में यह बिलकुल सपने जैसा लगता है कि 1947 में जिस भारत की जीडीपी 2.7 लाख करोड़ रूपये थी, वह आज की तारीख में 272.41 लाख हो गयी है। आजादी के पहले तमाम क्षेत्रों की भांति स्वास्थ्य सेवा का बहुत बुरा हाल था। 1941-50 के दौरान प्रति हजार व्यक्तियों में मृतकों की संख्या 25 थी। शिशु मृत्यु दर प्रति एक हजार जन्म में 175 से 190 के बीच रही। 1940 से 1951 के बीच

की पैदाइस होने वाले औसतन भारतीय मात्र 32 वर्षों की जिंदगी की उम्मीद रखते थे। चेचक, प्लेग और हैजा जैसी महामारियां तथा मलेरिया, आंव, डायरिया जैसी बीमारियां प्रत्येक वर्ष लाखों लोगों को मौत के मुंह में धकेल देती थी। अकेले मलेरिया ने ही एक चौथाई लोगों को अपने चपेट में ले रखा था। स्वास्थ्य सेवाओं का बहुत बुरा हाल था। 1947 में सिर्फ 10 मेडिकल कॉलेज थे, जो प्रति वर्ष सिर्फ 700 डॉक्टर तैयार करते थे। साथ ही 27 मेडिकल स्कूल थे जो 7000 स्वास्थ्य कर्मचारी तैयार करते थे। 1951 में सिर्फ कुल 18, 000 डॉक्टर थे, जिनमें अधिकांश शहरों में ही रहते थे। अस्पतालों की संख्या 1,915 थी, जिनमें 1,16, 731 विस्तरों की व्यवस्था थी। इसके अलावा 6,589 डिस्पेंसरियां थीं, जहां 7, 072 बिस्तरों की व्यवस्था थी। अधिकांश भारतीय शहरों में सफाई एवं मल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं थी और जिन शहरों में ऐसा इंतजाम था, वहां भी अधिकांश भारतीयों को इसका कोई फायदा नहीं मिलता था, क्योंकि ये सभी सुविधाएँ उन्हीं इलाकों तक सिमित थीं, जहां यूरोपीय और धनी भारतीय लोग रहते थे। गावों में आधुनिक जल आपूर्ति व्यवस्था का तो किसी ने नाम भी नहीं सुना था, ज्यादातर शहरों में भी इसका अभाव था। आज चिकित्सा क्षेत्र की उस छवि में क्रान्तिकारी बदलाव आ चुका है। आज जब पहले की उस स्थिति पर नजर दौड़ाते हैं तो कल्पना जैसी लगती है।

आजादी के समय सिर्फ डेढ़ लाख स्कूल थे : आज देश में स्कूलों की संख्या 15 लाख से ज्यादा हो गयी है। आजादी के वक्त देश में सिर्फ 20 यूनिवर्सिटीज और 404 कॉलेज थे। आज देश में 1043 यूनिवर्सिटीज और 42303 डिग्री कॉलेज हैं। 1948 में देश में सिर्फ 30 मेडिकल कॉलेज थे आज 541 मेंडिकल कॉलेज हैं। आजादी के वक्त देश में 36 इंजीनियरिंग कॉलेज थे, जिनमें सालाना सिर्फ 2500 छात्रों के दाखिला मिलता था। आज देश में 2500 इंजीनियरिंग कॉलेज हैं, 1400 पॉली टेक्निकल और 200 प्लानिंग और आर्किटेक्टर कॉलेज हैं। यानी करीब 4100 इंजीनियरिंग कॉलेज और यूनिवर्सिटीज हैं। आज पूरा विश्व विज्ञान व प्रौद्योगिकी के दौर में जी रहा है। समय बीतने के साथ विज्ञान व प्रौद्योगिकी ने बहुत ही ज्यादा तरक्की की है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नए-नए आविष्कारों ने मानव जीवन को बेहद सरल एवं सुगम बना दिया है। भारत ने भी आजादी के बाद विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में धीरे-धीरे उल्लेखनीय विकास किया। आज हम भले ही अनुसन्धान के कारण विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व से प्रतियोगिता करने की स्थिति में है, पर ब्रिटेन से आजादी पाने के समय इस मामले में हमारी स्थिति अत्यंत कारुणिक थी। लेकिन आजादी के बाद भारत ने उस स्थिति से खुद को उबारने का चमत्कार अंजाम दिया। अपने प्रयास से भारत ने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के लिए भारी संख्यक अनुसंधान संस्थान की स्थापना की है।

आजादी के बाद भारत ने सिर्फ विज्ञान व प्रौद्योगिकी के लिए विभिन्न अनुसन्धान

संस्थानों की स्थापना में ही कमाल नहीं किया, बल्कि सार्वजनिक क्षेत्र के निगमों का जाल भी फ़ैलाने का चमत्कार घटित कर दिया। 1951 में, भारत में सरकारी क्षेत्र के स्वामित्व वाले 5 सार्वजनिक निगम थे। लेकिन आज ऐसे सार्वजनिक निगमों की संख्या 365 है। ऐसा ही चमत्कार बैंकिंग के क्षेत्र में भी घटित हुआ है। 1947 में जहां 664 निजी बैंकों की लगभग 5000 शाखाएं थीं, वहीं पिछले वर्ष तक के आंकड़ों के मुताबिक़ देश में 12 सरकारी बैंकों, 22 निजी क्षेत्र के बैंकों, 43 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और 46 विदेशी बैंकों की लगभग 1 लाख, 40 हजार शाखाएं कार्यरत हैं। आजादी के बाद के वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में चमत्कारिक विकास हुआ उसमें गैर-कांग्रेसी सरकारों का योगदान अधिक से अधिक 10% हो सकता है, जबकि कांग्रेस सरकारों का योगदान 90% अधिक का रहा! बहरहाल सवाल पैदा होता है आजादी के समय जो भारत शिक्षा, स्वास्थ्य, खाद्यान्न, अनुसंधान और उद्योग-धंधों के लिहाज से प्रायः शून्य की स्थिति में रहा, उस भारत में कांग्रेस क्योंकर प्रत्येक क्षेत्र में चमत्कार घटित करने में सफल हो गयी? इसका सटीक जवाब है स्वतंत्रता संघर्ष के वादों को पूरा करने की तीव्र ललक! जी हां, भारत के आजादी के आन्दोलन को नेतृत्व देने वाली कांग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत को एक नई शक्ल देने का वादा किया था और उन वादों को पूरा करने के जुनून में ही उसने उसकी शक्ल बदल कर रख दिया।

अतः एक ऐसे समय में जबकि कांग्रेस द्वारा खड़े किये गए सरकारी उपक्रम बेचे और निजीकरण के सैलाब पैदा किये जा रहे हैं; मोदी सरकार द्वारा विकास का झूठा ढिंढ़ोरा पीटा जा रहा है, इस किताब का दूसरा संस्करण आना भारी राहत की बात है। दूसरे संस्करण की सफलता के लिए मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएँ।

दिनांक : 26 जून, 2025
(शाहू जी महाराज का जन्मदिन)

–कैप्टन अजय सिंह यादव
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
(ओबीसी विभाग) के पूर्व अध्यक्ष

अनुक्रम

शुभकामना संदेश 7

लेखकीय : सोनिया युग की कांग्रेस! 17

अध्याय-1 : भारत की आजादी के बाद कांग्रेस की उपलब्धियाँ

मत भूलें कि कांग्रेस सोनिया एरा से गुजर रही है! 36

सोनिया एरा पूर्व की कांग्रेस 39

आजादी के बाद एक मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रस्ताव रखा गया 41

26 नवंबर, 1947 को देश का पहला केंद्रीय बजट पेश हुआ 42

76 साल में जीडीपी 2.7 लाख करोड़ से 272.41 लाख करोड़ हुई 42

हरित क्रांति ने हमें खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया 42

भारत में दुनिया का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क, सड़क नेटवर्क में भी हम अव्वल 43

भारत एशिया का तीसरा सबसे बड़ा बिजली उत्पादक देश बना 43

आईटी शक्ति के रूप में उभरा भारत 43

वर्ष 1991 में देश में लाइसेंसिंग प्रणाली को समाप्त किया गया 43

पांच हजार से बढ़कर 1.40 लाख हुईं बैंकों की शाखाएं 44

दवाओं के निर्यातक बने, सेमीकंडक्टर के निर्माण की प्रक्रिया शुरू 44

दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना भारत 44

चुनौतियां अब भी शेष उन्हें दूर कर ही बन सकते हैं विकसित 45

विकसित राष्ट्र बनने के लिए आर्थिक असमानता से निपटना जरूरी 45

स्वास्थ्य : पीछे छूट गयी 32 साल की औसत आयु! 46

1950-60 का दौर और स्वास्थ्य संकट 47

आजादी के 75 साल बाद कैसा है भारत की शिक्षा का हाल 48

शिक्षा, बेहतर भविष्य की बुनियाद 48

हायर एजुकेशन पर भी ध्यान 49
अनाज उत्पादन में अव्वल 49
अनुसन्धान के क्षेत्र में भारत का कमाल 50
भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का निगम 51
भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की सूची 52
सीपीएसयू की सूची 52
नवरत्न सीपीएसयू की सूची 52
मिनीरत्न सीपीएसयू की सूचीः मिनीरत्न श्रेणी-I (61) 53
मिनीरत्न श्रेणी-II (12) 54
अन्य सी.पी.डी. की सूची 54
भारतीय राज्य फार्म निगम 56
स्वतंत्रता संघर्ष के वादों को पूरा करने के जुनून में :
कांग्रेस ने बदल दी देश की शक्ल! 56
स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान किये गए वादे 57
प्राथमिक लक्ष्य 58
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन विश्व इतिहास का सबसे बड़ा जन आन्दोलन! 59

अध्याय-2 : बीसवीं सदी के हमारे प्रधानमंत्री

नियति के साथ किये गये वादे को पूरा करने के लिए आगे बढ़े :
जवाहरलाल नेहरू 65
देश के नवनिर्माण के समयः भारत की बेशकीमती दौलत 66
भारत के दूसरे प्रधानमंत्रीः लाल बहादुर शास्त्री! 71
राष्ट्रीयकरण का सैलाब पैदा करने वालीं : इंदिरा गाँधी 73
ऐतिहासिक बांग्लादेश युद्ध 73
बैंकों का राष्ट्रीयकरण 74
प्रिवी-पर्स का खात्मा 76
कोयला खदानों का राष्ट्रीयकरण 77
पोखरण में परमाणु विस्फोट 78
इंदिरा गाँधी का विवादित फैसलाः आपातकाल 79
20 सूत्रीय कार्यक्रम 80
कंप्यूटर क्रांति के जनक : राजीव गांधी 82

वी.पी. सिंह के नेतृत्व में राजीव गाँधी के खिलाफ संगठित हुआ विपक्ष 84
राष्ट्रीय मोर्चा सरकार : 1989-90 85
मौत का पूर्वाभास 86
उदारवादी अर्थनीति के जनकः पीवी नरसिम्हा राव 88
मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री बनने के लिए मनाया 89
रुपए का अवमूल्यन 90
24 जुलाई, 1991 का वह ऐतिहासिक दिन जब औद्योगिक
नीति में भारी बदलाव हुआ 91
नेहरू और इंदिरा की नीतियों को पलटा 92
कांग्रेस पार्टी में ही विरोध 93
उद्योगपतियों से संवाद 93
राव के बाद अगले तीन वर्षों में देश ने देखे चार लघुकालीन प्रधानमंत्री 94

अध्याय-3 : इक्कीसवीं सदी में कांग्रेस में शुरू हुआ : सोनिया युग

इक्कीसवीं सदी में कांग्रेस में शुरू हुआ : सोनिया युग 99
मुलायम का तिरस्कार 100
सोनिया गांधी द्वारा कांग्रेस का नेतृत्व ग्रहण करते समयः देश के
आर्थिक और राजनीतिक हालात! 101
अन्धकारपूर्ण क्षेत्र 102
आधी आबादी की स्थिति रही अत्यंत शोचनीय 102
साम्प्रदायिकता का पुनरुत्थान और विकास! 102
विकराल रूप धारण करता निजीकरण और विनिवेश का शैतान! 103
विदेशी मूल का मुद्दा खड़ा करने लगे : कायर हिंदुत्ववादी 104
नेहरू वंश (Dynasty) 105
सोनिया गांधी बहू हैं या मात्र बच्चा पैदा करने वाली मशीन! 107
आरक्षित वर्गों के सफाये में मुस्तैद हुए : अटल बिहारी वाजपेयी 110
2002-2004 वाजपेयी सरकार के महत्वपूर्ण वर्ष 112
2004 का आम चुनाव 113
चौदहवीं लोकसभा चुनाव में शोर मचा सोनिया के विदेशी मूल का 114
भाजपा के पक्ष में हवा बनाते ज्योतिषी 115
अटल पुनः पांच साल देश की बागडोर थामेंगे उड़ीसा के ज्योतिषि 115

क्या निर्भूल है अटल-आडवाणी की जन्मकुण्डली 115
पंडित अनिल शुक्ला की भविष्यवाणी 116
स्वयंसेवियों को रोकने के लिए एक पत्र सोनिया के नाम 118
तीसरी गुलामी से राष्ट्र को बचाने की : एक ऐतिहासिक जिम्मेवारी 118
राष्ट्रवादियों का पासा पलटने के लिए : भोपाल घोषणापत्र 120
सोनिया-अटल : समग्र वर्ग की चेतना के आइने में 122
सोनिया को निष्प्रभावी करने के लिए फिर विदेश मूल का मुद्दा 122
जाति मुक्त समाज में जन्मना : सोनिया की दुर्लभ विशेषता 123
समग्र वर्ग की चेतना से शून्य हिन्दू 123
समग्र वर्ग की चेतना के कंगाल : आमजन भी, विशिष्टजन भी 124
भारतीय महामानव भी समग्र वर्ग की चेतना से समृद्ध नहीं 125
समग्र वर्ग की चेतना का दरिद्रतम नेता : अटल विहारी वाजपेयी 125
व्यापक राष्ट्रहित में : विदेशी मूल मुद्दा! 127
समग्र वर्ग के चेतना के अभाव की व्याधि से : कौन नहीं ग्रसित 128
स्व-वर्णवादी अटल ने ठेला : देश को तीसरी गुलामी की ओर 130
सर्वोच्च पदों पर सवर्ण वर्ग की नियुक्ति पर राष्ट्र विचार करे 131
और सोनिया सांप्रदायिक शक्तियों को शिकस्त देने में कामयाब हो गईं 132
संविधान समीक्षा आयोग का गठन 134
जातिवार जनगणना पर रोक 134
राजधर्म का पालन 135
पुरानी पेंशन योजना का खात्मा 136
निजीकरण को बढ़ावा—विनिवेश की शुरुआत 137
विनिवेशी और निजीकरण की दिशा में इसलिए आगे बढे थेः
प्रधानमंत्री वाजपेयी 137
शौरी ने धड़ाधड़ बेच दी थीं सरकारी कंपनियांः अब दर्ज होगा केस 139
और सोनिया के फैसले से देश में छा गया मातम 140
'आहत' सोनिया ने प्रधानमंत्री पद ठुकराया 141
कैसे बने मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री 142
रियल मदर इंडिया : सोनिया गांधी 144
त्याग की अनुपम मिसाल 144
सोनिया बनीं भारत माता 146

भारतीय संस्कृति नहीं ईसाई महामानवों का अनुसरण 148
समग्र वर्ग की चेतना संपन्न प्रधानमंत्री से वंचित देश 149
सोनिया द्वारा प्रधानमंत्री पद ठुकराना एक राष्ट्रीय त्रासदी 149
अब तक सभी प्रधानमंत्री समग्र वर्ग की चेतना की कसौटी पर रहे कमजोर 150
जाति पंक में फंसे देश को : सोनिया ने अपने दुर्लभ गुणों से किया वंचित 151
नोबेल पुरस्कार के योग्य रहा मनमोहन सिंह का कार्यकाल 152
वित्तीय नीतियाँ 153
स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा 153
राष्ट्रीय सुरक्षा और शासन 154
महत्वपूर्ण अधिनियम 155
पीएम के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह का दो बार का कार्यकालः
सोनिया एरा का स्वर्णिम काल 155
कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में सोनिया गांधी के 19 सालः पति
राजीव की मृत्यु से बेटे राहुल के उत्थान तक 158
प्रारंभिक अशांति 158
मुलायम का तिरस्कार 159
पहली चुनावी सफलता 159
सबसे बड़ा राजनीतिक मास्टरस्ट्रोक 160
2009 में यूपीए ने सत्ता बरकरार रखी 160
आलोचना 160
लोकसभा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 160
भविष्य की भूमिका 161
सोनिया गांधी के भाषण की 10 खास बातें 161
सोनिया के बाद : कांग्रेस में खडगे युग की शुरुआत! 163
रायपुर से कांग्रेस द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा सामाजिक न्याय का
एजेंडा इसलिए हो सकता है लागू! 165
कांग्रेस की नीतियों से सर्वाधिक लाभान्वित हुए : दलित और आदिवासी। 174
इंदिरा एरा में विकसित होना शुरू किया दलित माध्यम वर्ग 175
कांग्रेस राज में हुआ दलित लेखकों का उभार 176
कांग्रेस—राज में दलितोत्थान होते देख आरक्षण के खात्मे की
परिकल्पना में जुटे : हिंदुत्ववादी 179

मोदी को सत्ता में आने से न रोक पाना : सोनिया एरा कांग्रेस की बड़ी चूक	179
सत्ता में आने के बाद मोदी इसलिए हुए निजीकरण की दिशा में मुस्तैद	185
आरक्षण का कोई अर्थ नहीं रह गया है : गडकरी	187
सावधान! मोदी सरकार का अगला निशाना है : बचा-खुचा आरक्षण!	189
यदि 2024 में मोदी सत्ता में आते हैं तो ख़त्म हो जायेगा दामादगिरी दिखाने का अवसर!	193
जैसे-जैसे बढ़ा प्राइवेटाइजेशन, वैसे-वैसे कम हुई आरक्षण से मिलने वाली नौकरियां	195
प्राइवेट सेक्टर में आरक्षण देने की मांग	195
मोदी—राज की उपलब्धियां	196
विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 में भारत!	196
आर्थिक और सामाजिक विषमता का सर्वाधिक शिकार : आधी आबादी!	197
गरीबी की राजधानी : भारत!	198
सोनिया उत्तरकाल की चुनौतियां	199

लेखकीय

सोनिया युग की कांग्रेस!

आजादी के बाद के भारत की उपलब्धियों पर राय देते हुए कभी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में कहा था, 'पिछले 50 सालों में हमने बहुत तरक्की की है और इससे कोई इनकार नहीं कर सकता! मैं उन लोगों में नहीं हूँ जो देश की 50 सालों की उपलब्धियों पर पानी फेर दें। ऐसा करना देश के पुरुषार्थ पर पानी फेरना होगा!' वास्तव में अंग्रेजों से भारत को आजाद कराने के बाद अपने योग्य नेताओं के नेतृत्व में कांग्रेस ने देश में असंख्य स्कूल-कॉलेज-विश्वविद्यालय, अस्पताल, अनुसन्धान केंद्र, सरकारी उपक्रम खड़े करने एवं हरित सहित श्वेत क्रांति (ऑपरेशन फ्लड) घटित करने के साथ जिस तरह राजाओं के प्रिवी पर्स के खात्में, बैंकों, कोयला खदानों के राष्ट्रीयकरण इत्यादि का साहसिक काम अंजाम दिया, उससे कुछ ही दशकों के अंतराल में काफी हद देश की शक्ल ही बदल गयी। यह अपने आप में भारतीय उपमहाद्वीप की एक अद्भुत घटना रही, जिसका वर्तमान की जमीन पर खड़े होकर यदि कोई दुराग्रह मुक्त भाव से सिंहावलोकन करे तो उसका उद्गार वाजपेयी से बहुत भिन्न नहीं होगा!

आजादी के वादों को पूरा करने के जुनून में कांग्रेस ने बदल कर रख दी : देश की शक्ल!

जिस देश को अंग्रेजों ने लूट खसोट कर इस देश की बाग़डोर कांग्रेस को सौंपी थी, 1947 तक उस देश में सुई तक नहीं बनती थी; सारा देश राजा-रजवाड़ों के झगड़ों में बटा हुआ था। देश के मात्र पचास गाँवों में बिजली थी। किसी गाँव में नल नही थे। पूरे देश में मात्र दस बाँध थे! सीमाओं पर मात्र कुछ सैनिक : चार विमान और बीस टैंक थे! देश की सीमाएँ चारों तरफ़ से खुली थी और खजाना ख़ाली था। ऐसे बदहाल दशा में भारत कांग्रेस को मिला था! ऐसे बदहाल देश में कांग्रेस ने देखते ही देखते कुछ ही दशकों में विश्व की सबसे बड़ी ताक़त वाली सैन्य शक्ति तैयार कर दी; हज़ारों विमान-हज़ारों टैंक, अनगिनत फैक्टरियां खड़ी करने के साथ लाखों गाँवों में बिजली; सैकड़ों बाँध, लाखों किलोमीटर सड़कों का निर्माण; परमाणु बम;हर

हाथ में फ़ोन; हर घर में मोटर सायकल वाला मजबूत देश बना कर दिखा दिया।

वास्तव में यह बिलकुल सपने जैसा लगता है कि 1947 में जिस भारत की जीडीपी 2.7 लाख करोड़ रूपये थी, वह आज की तारीख में 272.41 लाख हो गयी है। आजादी के पहले तमाम क्षेत्रों की भांति स्वास्थ्य सेवा का बहुत बुरा हाल था। 1941-50 के दौरान प्रति हजार व्यक्तियों में मृतकों की संख्या 25 थी। शिशु मृत्यु दर प्रति एक हजार जन्म में 175 से 190 के बीच रही। 1940 से 1951 के बीच की पैदाइस होने वाले औसतन भारतीय मात्र 32 वर्षों की जिंदगी की उम्मीद रखते थे। चेचक, प्लेग और हैजा जैसी महामारियां तथा मलेरिया, आंव, डायरिया जैसी बीमारियां प्रत्येक वर्ष लाखों लोगों को मौत के मुंह में धकेल देती थी। अकेले मलेरिया ने ही एक चौथाई लोगों को अपने चपेट में ले रखा था। स्वास्थ्य सेवाओं का बहुत बुरा हाल था। 1943 में सिर्फ 10 मेडिकल कॉलेज थे, जो प्रति वर्ष सिर्फ 700 डॉक्टर तैयार करते थे। साथ ही 27 मेडिकल स्कूल थे जो 7000 स्वास्थ्य कर्मचारी तैयार करते थे। 1951 में सिर्फ कुल 18, 000 डॉक्टर थे, जिनमें अधिकांश शहरों में ही रहते थे। अस्पतालों की संख्या 1,915 थी, जिनमें 1,16, 731 विस्तरों की व्यवस्था थी। इसके अलावा 6,589 डिस्पेंसरियां थीं जहां 7, 072 बिस्तरों की व्यवस्था थी। अधिकांश भारतीय शहरों में सफाई एवं मल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं थी और जिन शहरों में ऐसा इंतजाम था, वहां भी अधिकांश भारतीयों को इसका कोई फायदा नहीं मिलता था, क्योंकि ये सभी सुविधाएँ उन्हीं इलाकों तक सिमित थीं, जहां यूरोपीय और धनी भारतीय लोग रहते थे। गावों में आधुनिक जल आपूर्ति व्यवस्था का तो किसी ने नाम भी नहीं सुना था, ज्यादातर शहरों में भी इसका अभाव था। आज चिकित्सा क्षेत्र की उस छवि में क्रान्तिकारी बदलाव आ चुका है। आज जब पहले की उस स्थिति पर नजर दौड़ाते हैं तो कल्पना जैसी लगती है।

आजादी के समय सिर्फ डेढ़ लाख स्कूल थे : आज देश में स्कूलों की संख्या 15 लाख से ज्यादा हो गयी है। आजादी के वक्त देश में सिर्फ 20 यूनिवर्सिटीज और 404 कॉलेज थे। आज देश में 1043 यूनिवर्सिटीज और 42303 डिग्री कॉलेज हैं। 1948 में देश में सिर्फ 30 मेडिकल कॉलेज थे आज 541 मेंडिकल कॉलेज हैं। आजादी के वक्त देश में 36 इंजीनियरिंग कॉलेज थे, जिनमें सालाना सिर्फ 2500 छात्रों के दाखिला मिलता था। आज देश में 2500 इंजीनियरिंग कॉलेज हैं, 1400 पॉली टेक्निकल और 200 प्लानिंग और आर्किटेक्टर कॉलेजेज हैं। यानी करीब 4100 इंजीनियरिंग कॉलेज और यूनिवर्सिटीज हैं। आज पूरा विश्व विज्ञान व प्रौद्योगिकी के दौर में जी रहा है। समय बीतने के साथ विज्ञान व प्रौद्योगिकी ने बहुत ही ज्यादा तरक्की की है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नए-नए आविष्कारों ने मानव जीवन को बेहद सरल एवं सुगम बना दिया है। भारत ने भी आजादी के बाद विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में धीरे-धीरे उल्लेखनीय विकास किया। आज हम भले ही अनुसन्धान के कारण

विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व से प्रतियोगिता करने की स्थिति में है, पर ब्रिटेन से आजादी पाने समय इस मामले में हमारी स्थिति अत्यंत कारुणिक थी। लेकिन आजादी के बाद भारत ने उस स्थिति से खुद को उबारने का चमत्कार अंजाम दिया। अपने प्रयास से भारत ने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के लिए भारी संख्यक अनुसंधान संस्थान की स्थापना की है।

आजादी के बाद भारत ने सिर्फ विज्ञान व प्रौद्योगिकी के लिए विभिन्न अनुसन्धान संस्थानों की स्थापना में ही कमाल नहीं किया, बल्कि सार्वजनिक क्षेत्र के निगमों का जाल भी फ़ैलाने का चमत्कार घटित कर दिया। 1951 में, भारत में सरकारी क्षेत्र के स्वामित्व वाले 5 सार्वजनिक निगम थे। लेकिन आज ऐसे सार्वजनिक निगमों की संख्या 365 है। ऐसा ही चमत्कार बैंकिंग के क्षेत्र में भी घटित हुआ है। 1947 में जहां 664 निजी बैंकों की लगभग 5000 शाखाएं थीं, वहीं पिछले वर्ष तक के आंकड़ों के मुताबिक़ देश में 12 सरकारी बैंकों, 22 निजी क्षेत्र के बैंकों, 43 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और 46 विदेशी बैंकों की लगभग 1 लाख, 40 हजार शाखाएं कार्यरत हैं। आजादी के बाद के वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में चमत्कारिक विकास हुआ उसमे गैर-कांग्रेसी सरकारों का योगदान अधिक से अधिक 10% हो सकता है, जबकि कांग्रेस सरकारों का योगदान 90% अधिक का रहा! बहरहाल सवाल पैदा होता है आजादी के समय जो भारत शिक्षा, स्वास्थ्य, खाद्यान्न, अनुसंधान और उद्योग-धंधों के लिहाज से प्रायः शून्य की स्थिति में रहा, उस भारत में कांग्रेस क्योंकर प्रत्येक क्षेत्र में चमत्कार घटित करने में सफल हो गयी? इसका सटीक जवाब है स्वतंत्रता संघर्ष के वादों को पूरा करने की तीव्र ललक! जी हां, भारत के आजादी के आन्दोलन को नेतृत्व देने वाली कांग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत को एक नई शक्ल देने का वादा किया था और उन वादों को पूरा करने के जुनून में उसने उसकी शक्ल बदल कर रख दिया।

अंग्रेजों से भारत के आजादी की लड़ाई कांग्रेस के नेतृत्व में लड़ी गयी, इस तथ्य से तो सभी वाकिफ हैं, पर इस बात से अवगत नहीं हैं कि यह संभवतः अपने किस्म का विश्व इतिहास का सबसे बड़ा जन आन्दोलन रहा। 1919 के बाद इस जनांदोलन का निर्माण इस धारणा के इर्द-गिर्द हुआ था कि आम जनता को राजनीति और उनके मुक्ति प्रयासों में स्वयं सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए और उन्हें निभानी ही पड़ेगी। यह आन्दोलन भारतीय जनता के एक विशाल हिस्से को राजनीतिक गतिविधि के अन्दर खींचने, सक्रिय करने और उन्हें राजनीतिक शिक्षा देने में सफल हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन सम्पूर्ण रूप से प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र और व्यक्ति के तमाम नागरिक स्वतंत्रताओं (Civil liberties) आधारित राजनीति के प्रति प्रतिबद्ध था। आन्दोलन ने वह अनुभव प्रस्तुत किया जिसके माध्यम से ये दोनों ही तत्व भारतीय राजनीतिक चिंतन के अभिन्न अंग बन गए। कांग्रेस के नेतृत्व में लड़ा

Continue Your Reading Journey

This preview has ended. Access the complete library and support our mission.

Join Our Inclusive Reading Community

- ✓ We champion diverse voices and perspectives
- ✓ Your support helps amplify underrepresented authors
- ✓ We provide free access to educational institutions
- ✓ Building bridges through shared stories
- ✓ Creating space for all narratives to be heard

Support Our Mission

Your donation enables us to:

- Curate diverse book collections
- Support authors from marginalized communities
- Provide free resources to educators
- Maintain our accessible digital library

Visit: www.diversitymission.in

Sign the diversity pledge • Make a donation • Download full library